प्रमुख उपनिषदों के सिद्धान्त

सामान्यतः वैदिक साहित्य को चार भागों में बाँटा जाता है-

1. वैदिक संहितायें
2. ब्राह्मण ग्रन्थ
3. आरण्यक ग्रन्थ
4. उपनिषद्

वैदिक संहिता में चार वेदों की गणना है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् अलग-अलग वेदों से सम्बद्ध हैं। वैदिक साहित्य के पद्यों को मन्त्र कहा जाता है और इन मंत्रों के रचयिता ऋषियों को मंत्रद्रष्टा कहा जाता है। देवों की आराधना और यज्ञों के निष्पादन के अवसर पर वैदिक संहिता के मंत्रों को पढ़ा जाता है क्योंकि संहिता के मन्त्र शुद्धतम रूप में होते हैं। मंत्रों के विधि-भाग की व्याख्या करने वाले प्रामाणिक ग्रन्थ ब्राह्मण ग्रन्थ माने जाते हैं। आरण्यक ग्रन्थों में संकलित मंत्रों की उपादेयता वानप्रस्थ आश्रम में होती है और विधिपरक मन्त्र वानप्रस्थी द्वारा प्रयुज्य होते हैं। उपनिषद प्रतीकात्मक रूप से आध्यात्मिक और दार्शनिक सिद्धांतों की व्याख्या करते हैं।

उपनिषद् शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है- उप+नि+√सद्। 'उप' से तात्पर्य है 'समीप'। 'नि' से तात्पर्य है 'निश्चयपूर्वक अथवा निष्ठापूर्वक'। √सद् धातु 'बैठना' के अर्थ को बताती है। इस प्रकार उपनिषद् का अर्थ 'के समीप निष्ठापूर्वक बैठना'। निस्संदेह यहाँ गुरू के समीप निष्ठापूर्वक बैठने का भाव है। गुरू शिष्य को तत्त्वज्ञान का बोध कराते हैं। उपनिषदों को ब्रह्मविद्या भी कहा जाने लगा क्योंकि इनमें परम

तत्त्व का ही विवेचन है। उपनिषद अत्यंत ही गूढ़ ज्ञान को प्रतिपादित करते हैं और कालांतर में ये दार्शनिकों के सिद्धान्त प्रतिपादन में सम्बल बने।

उपनिषदों की सर्वाधिक स्वीकृत संख्या 108 मानी जाती है किन्तु विद्वानों ने इनकी संख्या 200 तक भी मानी है। मुख्य उपनिषदों की संख्या पर विद्वज्जनों में मतैक्यता नहीं है। कुछ मानते हैं कि मुख्य उपनिषद् 18 हैं- 'अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयम् .....'। शंकराचार्य ने 11 उपनिषदों पर भाष्य लिखा अतः यह भी माना जाता है कि 11 उपनिषद् ही मुख्य हैं जो इस प्रकार हैं- ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक और श्वेताश्वतर। मुक्तिक उपनिषद् श्वेताश्वतर उपनिषद् की गणना मुख्य उपनिषदों में नहीं करता और दश को ही मुख्य मानता है -

ईशकेनकठप्रश्नमुण्डमाण्डूक्यतित्तिरिः।

ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा॥ (मुक्तिक उपनिषद्, 1-30)

उपनिषदों का वर्गीकरण

मुक्तिक उपनिषद् ने वेदों से सम्बद्ध 108 उपनिषदों का वर्गीकरण इस प्रकार किया है-

क्रम-सं॰	सम्बद्ध वेद	उपनिषद्	कुल उपनिषदों की संख्या
1	ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषितकि आदि	कुल 10 उपनिषद्
2	शुक्ल यजुर्वेद	ईश, बृहदारण्यक आदि	कुल 19 उपनिषद्
3	कृष्ण यजुर्वेद	कठ, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर, कैवल्य आदि	कुल 32 उपनिषद्
4	सामवेद	केन, छान्दोग्य, मैत्रायणि आदि	कुल 16 उपनिषद्
5	अथर्ववेद	प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, महानारायण आदि	कुल 31 उपनिषद्

वरदाचार्य ने विषय अथवा सिद्धान्त के आधार पर 108 उपनिषदों का वर्गीकरण इस प्रकार किया है-

- वेदान्त के सिद्धांतों के अनुकूल – 24 उपनिषद्
- योग के सिद्धांतों के अनुकूल- 20 उपनिषद्
- सांख्य के सिद्धांतों के अनुकूल- 17 उपनिषद्
- वैष्णव के सिद्धांतों के अनुकूल- 14 उपनिषद्
- शैव के सिद्धांतों के अनुकूल- 15 उपनिषद्
- शाक्त और अन्य के सिद्धांतों के अनुकूल- 18 उपनिषद्

उपनिषदों के प्रतिपाद्य विषय के आधार पर इस प्रकार इनको संक्षेप में वर्गीकृत किया जा सकता है-

- ✓ ब्रह्म सिद्धान्त
- ✓ आत्मविषयक सिद्धान्त
- ✓ प्राणविषयक सिद्धान्त
- ✓ आवागमन का सिद्धान्त
- ✓ नैतिक सिद्धान्त

उपनिषदों का मुख्य प्रतिपाद्य तो ब्रह्म ही है। सर्वत्र उसी का मुख्य रूप से विवरण प्राप्त होता है। उसके अतिरिक्त अन्य प्रतिपादित विषय तो प्रसंगवश आते प्रतीत होते हैं। यही कारण है कि मुण्डकोपनिषद् उद्घोषणा करता है-

तस्मै स होवाच। द्वे विद्ये वेदितव्ये इति
ह स्म यद्ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च॥ मुण्डको॰ 1.1.4.॥
तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेद: सामवेदोऽथर्ववेद: शिक्षा
कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति।
अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते॥ मुण्डको॰ 1.1.5.॥

स्पष्टतः जिस विद्या से अक्षर, अविनाशी ब्रह्म की प्राप्ति होती है वह परा विद्या है और परा विद्या ही उपनिषदों को अभीष्ट है। वह ब्रह्म पूर्ण है जैसा कि ईशावास्योपनिषद् में कहा गया है-

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥ईशावास्यो॰ 1॥

ब्रह्म-तत्त्व की भांति जीव-तत्त्व या आत्म-तत्त्व भी उपनिषदों को उतना ही प्रिय है क्योंकि इस विषय पर भी पर्याप्त वर्णन प्राप्त होता है। ब्रह्म-तत्त्व और जीव-तत्त्व का एकत्र सुंदर वर्णन श्वेताश्वतरोपनिषद् में आता है-

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वादवत्त्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीति॥ श्वेताश्वतरो॰ 4.6॥

आत्मा, जीव, प्राण आदि प्रायः समान अर्थ में ही उपनिषदों में प्रयुक्त हुए है। इस संदर्भ में छान्दोग्योपनिषद् में इंद्रियों के मध्य श्रेष्ठता का विवाद और प्रजापति द्वारा प्राण को सर्वश्रेष्ठ बताना उल्लेखनीय है। प्रजापति ने प्राण को जीव के लिए सबसे आवश्यक माना है। प्रकारांतर से प्राण आत्मा ही है।

जीव इस संसार चक्र में आता और जाता है। यही भव का बंधन है। कठोपनिषद् में जीव के आवागमन की तुलना वनस्पतियों से की गयी है कि किस प्रकार वे उत्पन्न और नष्ट होती हैं-

अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथाऽपरे।
सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः॥कठोप॰ 1.1.6॥

यमराज ने इसी आवागमन की चर्चा करते हुए नचिकेता से कहा है कि ‘ मानी पुनः पुनर्वशमापद्यते मे’।

उपनिषद् नैतिक शिक्षा के महासागर हैं। मनुष्य के नैतिक उत्थान पर विशेष बल दिया गया है। सत्य संभाषण की भूरि-भूरि प्रशंसा और मिथ्या प्रलाप की

भर्त्सना की गयी है और कहा गया है- 'सत्यमेव विजयते नानृतम्'। आपसी सौहार्द्र और सहयोग का उच्च आदर्श इस मन्त्र में दिखता है-

ॐ सह नाववतु | सह नौ भुनक्तु | सह वीर्यं करवावहै |

तेजस्वि नावधीतमस्तु | मा विद्विषावहै || कठोप॰ 1.1.1||

नैतिकता का पाठ पढ़ा हुआ नचिकेता अपने पिता द्वारा वृद्ध गायों को दान देते हुए देख कर दुःखी होता है और कहता है-

पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिंद्रिया: ।
अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ता: ददत् ॥1.1.3 ॥

भारतीय संस्कृति में उपनिषदों का महत्त्व इसी से सिद्ध होता है कि सभी भारतीय दर्शनों (आस्तिक दर्शनों) ने अपने सिद्धान्त को युक्तियुक्त बनाने के लिए उपनिषदों को ही अपना आधार बनाया। प्रस्थानत्रयी के अंतर्गत उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और गीता की गणना की जाती है। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि ब्रह्मसूत्र और गीता उपनिषदों के ऋणी हैं जिनसे इनको बहुत मजबूत आधार मिला।